प्रकाशन क्रमांक : अगस्त, 2012

गाय एवं भैंसों में बाँझपन संबंधी समस्या एवं निराकरण उपाय

आलेख

सुभाष कच्छावाह, धीरज सिंह एवं एम.एम. रॉय

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान

कृषि विज्ञान केन्द्र

पाली–मारवाड़ (राजस्थान) – 306 401

दुग्ध उत्पादन व्यवसाय में अधिकतम लाभ के लिए यह आवश्यक होता है कि गाय या भैंस बच्चा देने के बाद तीसरे या चौथे महीने में अवश्य ग्याभिन हो जाये। यदि इस स्थिति में विलम्ब होता है तो यह समझना चाहिए कि या तो संबंधित पशु की पोषण व्यवस्था में कोई कमी है अथवा पशु बच्चा देते समय किसी कारण से बाँझपन का शिकार हो गया है। गाय एवं भैंसों में बाँझपन प्रजनन–संबंधी मुख्य बीमारी है। इसके कारण इन पशुओं से होने वाले दुग्ध उत्पादन पर विपरीत असर पड़ता है क्योंकि दुग्ध उत्पादन पशु के सफलता पूर्वक ब्याने के बाद ही आरम्भ होता है। साथ ही दुग्ध उत्पादन शुरू होने के निश्चित समय बाद स्वतः ही धीरे–धीरे कम होकर बंद हो जाता है अर्थात् पशु सूख जाता है। आदर्श रूप में एक दुधारू पशु वर्ष में 305 दिन दूध देना चाहिये तथा 60 दिन सूखा रहना चाहिये। ऐसा होने पर ही हम पशु से उसकी दुग्ध उत्पादन क्षमता (नस्ल) एवं पोषण व्यवस्था के अनुरूप अधिकतम दुग्ध उत्पादन ले सकते हैं।

अतः पशु से अधिकतम दुग्ध उत्पादन हेतु उसकी प्रजनन क्षमता भी अधिकतम होनी आवश्यक है। इस हेतु दो मुख्य लक्ष्यों का हमेशा ध्यान रखना चाहिये :–

(1) देशी नस्ल की बछड़ी या पाडी 3 से 4 वर्ष की आयु के बीच प्रथम बार गर्मी (पाले) में आ जानी चाहिये अर्थात् 4 से 5 वर्ष की उम्र तक यह बछड़ी/पाडी प्रथम बार ब्याह जानी चाहिये।

(2) ब्याने के बाद गाय एवं भैंस 2 से 3 महीने बाद वापिस गर्मी (पाले) में आ जानी चाहिये अर्थात् प्रथम बार ब्याने के बाद गाय 12–13 महीने बाद तथा भैंस 13–14 महीने बाद वापिस ब्याह जानी चाहिये।

ध्याने रहे गाय का गर्भकाल लगभग 280 दिन एवं भैंस का लगभग 310 दिन का होता है। अनुमानतः 1 महीने की देरी से गर्मी में आने पर पशुपालक को लगभग 1–2 हजार रूपये का आर्थिक नुकसान होता है।

प्रथम बार गर्मी में आने हेतु पशु का शारीरिक वजन उसकी उम्र के मुकाबले ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। यह वजन देशी नस्ल की बछड़ी हेतु लगभग 175 से 200 किलो एवं पाडी के लिये लगभग 225 से 250 किलो होता है। अतः उपरोक्त वजन हो जाने पर कम उम्र होने पर भी पशु गर्मी में आ सकता है। इसी प्रकार उम्र अधिक होने तथा वजन कम होने पर भी पशु सफल प्रजनन हेतु अनुपयुक्त हो सकता है। अतः आरम्भ से ही बछड़ी/पाडी के संतुलित पोषण की तरफ ध्यान देना चाहिये जिससे उसकी वृद्धि दर तेज हो एवं वह न्यूनतम उम्र में प्रथम बार सफल प्रजनन कर सके।

शुष्क क्षेत्र में गर्मी (पाले) में न आने के मुख्य कारण:

शुष्क क्षेत्रों में डेयरी पशुओं के समय पर गर्मी में न आने के मुख्य कारण निम्न हैं :–

1. **शारीरिक दुर्बलता** – इसका मुख्य कारण है क्षेत्र में पशुओं का असंतुलित पोषण एवं हरे चारे की कमी। इनके कारण शरीर में निम्न कमियाँ आ जाती हैं :–

   (क) प्रोटीन एवं ऊर्जा की कमी (ख) विटामिन 'ए' की कमी

   (ग) विशेष लवणों की कमी मुख्यतः फॉस्फोरस एवं अन्य सूक्ष्म लवण जैसे कोबाल्ट, मैंगनीज, कॉपर, जिंक आदि। फॉस्फोरस की कमी अधिकतर कैल्शियम की कमी के साथ जुड़ी होती है जिससे पशु जूते, चप्पल इत्यादि चीजें खाने लगता है और उसका दूध उत्पादन गिर जाता है।

2. **शरीर में आन्तरिक एवं बाहरी परजीवियों का प्रकोप** – यह परजीवी भारीर से खून एवं अन्य पोषक तत्व चूस कर पशुओं में शारीरिक दुर्बलता संक्रमण एवं अन्य रोग फैलाने का कारण बन जाते हैं। साथ ही वह पशु की पाचन शक्ति को भी बिगाड़ देते हैं।

3. **जनन अंगों में अण्डाशय एवं गर्भाशय के मुख्य रोग/विकार** – इसमें मुख्य रूप से गर्भाशय में संक्रमण होता है तथा अंडाशय के उपर गांठ बन जाती है।

4. **पशु का ग्याभिन होना** – पशु प्रबंध व्यवस्था में खराबी के कारण पशुपालक को पशु के गर्मी में आने एवं प्राकृतिक रूप से साथ में घूम रहे नर पशु से ग्याभिन होने का पता ही नहीं चलता। समय पर गर्भ परीक्षा न करवाने पर भी यह समस्या आ सकती है। यह समस्या भैंसों के मुकाबले गायों में अधिक होती है बाँझपन शिविरों में आने वाले लगभग 5% पशु ग्याभिन पाये जाते हैं।

5. **नर पशु/कृत्रिम गर्भाधान सुविधा उपलब्ध न हो पाना** – कई गाँवों/क्षेत्रों में प्रजनन हेतु सामान्य नर पशु उपलब्ध न हो पाने के कारण भी गर्मी में आया पशु ग्याभिन नहीं हो पाता। कृत्रिम गर्भाधान सुविधा की अनुपलब्धता या संबंधित जानकारी न होने के कारण भी यह समस्या आ सकती है। इन कारणों से पशु का ब्यात अन्तराल बढ़ता रहता है जिससे पशुपालक को बढ़े हुये सूखाकाल (दुध न देने का समय) के कारण आर्थिक नुकसान होता है।

6. **गर्मी में आने की पहचान न हो पाना** – पशु का गुंगे पाले में आना। यह समस्या भैंसों में विशेष–तौर से गर्मी के मौसम में अधिक होती है।

बचाव के उपाय :

1. **पशु के जनन अंगों की जाँच करवाना** – समय पर गर्मी में न आने पर पशु को बीमार मानकर शीघ्र ही किसी योग्य पशु चिकित्सक द्वारा पशु के जनन अंगों की जाँच करवायें तथा कारणानुसार ईलाज करायें। इस हेतु किया गया खर्चा पशु के शीघ्र गर्मी में आने एवं ब्याने पर आसानी से पूरा हो जाता है।

2. **परजीवियों से मुक्ति** – किसी भी ईलाज के आरम्भ होने से पूर्व आवश्यक है कि पहले पशु विभिन्न प्रकार के आन्तरिक एवं बाहरी परजीवियों से मुक्त हो जाये। आन्तरिक परजीवियों के निवारण हेतु पशु को फेनबेन्डाजोल, ऐलबेन्डाजोल एवं ओक्सफेनडाजोल नामक परजीवी नाशक दवा का उपयोग वर्ष में 3 से 4 बार नियमित रूप से किया जाना चाहिये। बाहरी परजीवियों (जैसे जूं, चिचड़ी आदि) से बचाव हेतु बाजार में उपलब्ध साइपरमैथरिन नामक कीटनाशक दवा का पशु के शरीर पर छिडकाव किया जा सकता है। आजकल बाजार में आइवरमैक्टिन नामक इन्जेक्शन उपलब्ध है जिससे आन्तरिक एवं बाहरी परजीवी दोनो एक साथ मर जाते हैं।

3. **नियमित संतुलित पशु आहार की व्यवस्था करना –**

(क) इस हेतु पशुओं को 1–2 किलो संतुलित दाना (बाटा) मिश्रण आरम्भ से ही शरीर के रखरखाव एवं विकास हेतु आवश्यक है। पशु के दूध देने या न देने से इस व्यवस्था का कोई संबंध नहीं है। दूध देने की स्थिति में पशु को इसके अतिरिक्त अधिक मात्रा (दुग्ध उत्पादन का लगभग 40%) में दाना देना होता है। हमारे यहाँ पर पशुओं को पर्याप्त पोष्टिक आहार नहीं मिल पाता है। पशु आहार में प्रोटीन की अत्यधिक कमी होती है जिससे अधिकांश पशुओं का स्वास्थ्य खराब रहता है। पशु आहार में हरे चारे की पर्याप्त मात्रा न होने के कारण अधिकांश पशुओं में मदहीनता उनके कुपोशण, उर्जा, आवश्यक खनिज लवणों एवं विटामिनों आदि की कमी से होती है। पशुओं के दानें–चारे में शर्करा (कार्बोहाइड्रेट), प्रोटीन, वसा, खनिज लवण तथा विटामिनों का संतुलित मात्रा में होना नितांत आवश्यक होता है। इन पोषक तत्वों की कमी एवं असंतुलित मात्रा होने के कारण ही कुपोषण जन्य रोग पैदा हो जाते हैं।

(ख) विटामिन 'ए' का उपयोग – शुष्क क्षेत्रों में जहाँ हरा चारा उपलब्ध नहीं है पशु को बाहर से विटामिन 'ए' देना सफल प्रजनन हेतु बहुत आवश्यक है। इस हेतु बाँझपन की स्थिति में पशु चिकित्सक की सलाह से 5–10 मिली. विटामिन 'ए' के इन्जेक्शन दो से तीन बार (एक दिन छोड़कर) लगवाये जाने चाहिये। पशुपालक विटामिन 'ए' के लिये अजोला को नियमित रुप से खिलाकर इसकी कमी को पूरा कर सकते हैं। इसका उत्पादन घर पर कर सकते हैं तथा एक से दो किलो प्रतिदिन बाँटे के साथ दे सकते हैं। इससे पशुओं में खनिज तत्वों की कमी पूरी होगी तथा दूध का उत्पादन भी बढेगा।

(ग) **फॉस्फोरस का उपयोग** – इसी प्रकार फॉस्फोरस नामक लवण की नियमित उपयोग सफल प्रजनन हेतु आवश्यक है। इस हेतु बाँझपन की स्थिति में पशु चिकित्सक की सलाह से 10–20 मिली. फॉस्फोरस के इन्जेक्शन तीन दिन तक लगवाये जाने चाहिये।

(घ) **नियमित रूप से लवण – मिश्रण खिलाना** – यह लवण–मिश्रण बाजार में उपलब्ध है। आरम्भ से ही पशुओं को उनकी उम्र के अनुसार 20 ग्राम से 50 ग्राम लवण–मिश्रण प्रतिदिन खिलाना चाहिये। बाँझपन की स्थिति में 20–50 ग्राम (एक मुट्ठी) लवण मिश्रण उसके दाने में मिलाकर अवश्य खिलायें।

4. **जनन अंगों में विकार/खराबी का ईलाज** – पशु चिकित्सक द्वारा जाँच करवाकर सलाह अनुसार अण्डाशय एवं गर्भाशय की बीमारियों का नियमित ईलाज करवायें।

सफल प्रजनन कराने हेतु निम्न बातों का भी अवश्य ध्यान रखें –

1. गर्मी में आने के लक्षणों का पूरा ध्यान रखें तथा पशु का अच्छी नस्ल तथा स्वस्थ नर से ही प्रजनन करवायें। इस हेतु नर पशु का अलग से उचित रखरखाव आवश्यक है। उसे गांव में खुला न छोड़ें अन्यथा उसकी प्रजनन शक्ति का नुकसान होता है। कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा उपलब्ध होने पर उसका उपयोग ज्यादा लाभकारी है।
2. गर्भाधान कराने के 2–3 महीने बाद पशु की पशु–चिकित्सक द्वारा गर्भधारण जाँच अवश्य करवा लेनी चाहिये। बिना गर्भ परीक्षा के घशु को ग्याभन नहीं मान लेना चाहिये अन्यथा गर्भधारण नहीं होने पर बाद में बहुत अधिक आर्थिक नुकसान हो सकता है।
3. अपने पशु का प्रजनन संबंधी रिकॉर्ड अवश्य रखें जिसमें उसके गर्मी में आने, प्रजनन कराने आदि सभी तारीख का विवरण रखें। ऐसा करने से आपको समय पर गर्मी में न आने वाले/गर्भधारण नहीं होने वाले पशुओं की पहचान जल्दी हो सकती है।
4. पशुपालक अपने पशु को संतुलित एवं पोष्टिक आहार नियमित रुप से दें जिससे हरे चारे की भरपूर खुराक के साथ दाना (चोकर एवं खल का मिश्रण) एवं खनिज मिश्रण आवश्यक मात्रा में हो।
5. पशु के प्रतिदिन के आहार में 50 ग्राम खनिज मिश्रण एवं 30 ग्राम सादा नमक अवश्य मिलाएं।
6. पशु को संक्रामक बिमारियों से बचाने के लिए समय–समय पर टीके लगवाएं क्योंकि संक्रामक बीमारी से ग्रसित पशु की प्रजनन क्षमता कम हो जाती है।
7. बाड़े की साफ–सफाई का उचित ध्यान रखें क्योंकि गन्दगी से अनेकों रोग उत्पन्न हो जाते हैं।
8. पशु को चार से छः महीने के अंतराल पर पेट के कीड़ों की दवा दें। इसके लिए एल्बेन्डाजोल, फेनेबेन्डाजोल आदि 10 मि.ग्रा. प्रति कि.ग्रा. शरीर भार के हिसाब से दे सकते हैं।
9. बाह्य परजीवियों से बचाने के लिए बाड़े में चूने की सफेदी कराएँ एवं बाडे के फर्श पर चूने अथवा फिनायल के घोल का प्रत्येक सप्ताह छिड़काव करें।

पशु पालन का आधार

सन्तुलित पशु आहार

प्रकाशक : निदेशक, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

Evergreen Printers 94141-28647